Research Paper Social Science

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में विम्बविधान (Santo Ka Dharmik Ek Samajik Santulan Me Yogdan)

Moneeka Devi | Assistant Professor in Hindi, C. R.M. Zaat P. G. Collej, Heesar.

श्रेष्ठ और शक्तिशाली राजा के समान ही सन्त भी देश व समाज में शान्ति, सुव्यवस्था ओर सन्तुलन स्थापित करने में योगदान करते थे। राजा सशक्त सेना द्वारा देश की बाह्य आक्रमणकारियों से रक्षा करता था तथा शासक और व्यवस्था द्वारा प्रजा में आन्तरिक द्वन्द्वों का समाधान करके शान्ति स्थापित करने में प्रयत्नशील रहता था तो सन्त समाज की जन–संचेतना को उभार कर परब्रह्म और आत्मस्वरूप का साक्षात्कार कराने के साथ मानव जाति को नैतिक और सामाजिक मूल्यों तथा गुणों से अवगत कराता हुआ शान्तिमय एवं संतुलित सन्तों जिनमें निर्गुण ज्ञानाश्रयी तथा निर्गुण प्रेमाश्रयी भक्त, वैष्णव एवं सूफी सन्त सम्मिलित थे – के द्वारा किए गए सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों का देशव्यापी प्रभाव पड़ा था। इस काल के प्रमुख सन्तों में विशेषकर सूर, तुलसी तथा दादू ने देशव्यापी धार्मिक एवं सामाजिक विकृतियों का खंडन करके एक आदर्श समाज का स्वप्न देखा था।

रसिक कवि सूरदास कृष्ण की माधुर्य मूर्ति के रस–सागर में रसोक्तियों का रसास्वादन करते हुए सामाजिक वर्ग एवं वर्ग–भेद से दूर रहे तथा उन्होंने ब्रज को प्रेम की भावना पर आधारित सामाजिक जाति–भेद, कुल–भेद की परिधि से निकालकर समानता और मानवतावाद की नींव पर खड़ा किया।

मर्यादा प्रिय तुलसी ने तत्कालीन सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक विकृतियों को दृष्टिगत रखकर एक आदर्श समाज–राम राज्य की परिकल्पना की जो परिष्कृत वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था पर आधारित थी। उनके मतानुसार जब समाज में चारों वर्ण अपने–अपने कर्तव्य एवं कर्मों में लीन रहते हैं तथा एक वर्ण दूसरे वर्णों के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करता तभी उनके आदिदैविक आदि भौतिक और आत्मिक परितापों का अन्त

REFERENCES

1. नवभारत टाइम्स, 30 नवम्बर, 1981, पृ0 1 कॉलम 2 । 2. वही 'वेतन भत्ते पर रोक' नामक सम्पादकीय लेख पृ0 4 कॉलम। । 3. वही – 6 नवम्बर 1981 'वितीय अनुशासनहीनता' संपादकीय लेख पृ0 4, कॉलम। । 4. श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, पृ0 17 । 5. वही पृ0 22 । 6. अथर्ववेद 6, 2, 3 । 7. वही, 3, 23, 3 । 8. अथ च इच्छेद् दुहिता में पण्डिता जायते : वृहदारण्य को पनिषद्, 6, 4, 17 । 9. स हैतावानास यथा स्त्री पुमांसो सम्परिष्वक्तौ स इनमेवात्मानं द्वेधापातयततः पतिश्च पत्नी चा भवताम् – बृहदारण्य कोपनिषद् 1, 4, 3 । 10. न ही दृष्मनावुच्यं लोके किंवन विद्यते। पादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम्। – मनुस्मृति – 9, 134 । 11. उदीर्ष नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेषणहि। – ऋग्वेद – 10, 18, 8 । 12. पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने। रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्रीस्वातन्त्रयमर्हति। – मनुस्मृति 93 । 13. अस्वतंत्रा स्त्रियः कार्याः पुरूषैः स्वेर्दिवानिशम्। – वही 9, 2 । 14. वही – 9, 808, 1 । 15. वही – 9, 83 । 16. ततः प्रमुति यौ मोहात् प्रमीतपतिकां स्त्रियम्। नियोजयत्यपत्याये तं विगर्हन्ति साधवः। – मनुस्मृति , 9, 68 । 17. कन्येवं कुलजीवितम्। – कुमारसम्भवम् – 6, 63 ।18. गृहिणी सचिवः सखी मिथः । – रघुवंश, 8, 67 । 19. सहस्त्र तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते। –मनुस्मृति, 2, 145 । 20. समर्पण और साधना, सम्पादकः भवानीप्रसाद मिश्र आदि में प्रकाशित 'स्वतंत्र भारत में नारी की स्थिति' नामक लेख, हरिशंकर शर्मा, पृ0 139 । 21. श्रृंखला की कड़ियां पृ0 26 । 22. धर्मयुग, 14 जून 1981 में प्रकाशित 'आत्महत्या : दहेज कितना जिम्मेदार ?' आशारानी व्होरा, पृ0 13 । 23. नवभारत टाइम्स, नयी दिल्ली, 14 सितम्बर, 1980 में प्रकाशित लेख 'हमारी शराफत को कमजोरी मत समझो' उर्मिला रुंगटा, रविवार्ता, पृ0 4 ।24. नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 14 सितम्बर, 1980 में प्रकाशित लेख 'हमारी शराफत को कमजोरी मत समझो' उर्मिला रुंगटा, रविवार्ता, पृ0 4 । 25. श्रृंखला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, पृ0 109 ।